VISION IAS

www.visionias.in

08 JUL 2022

GENERAL STUDIES (TEST CODE : 2211)

Name of Candidate	Kparikshit		
Medium Eng./Hindi	हिन्दी	Registration Number	683437
Center	MN	Date	08-07-2022

INDEX TABLE

Q. No.	Maximum Marks	Marks Obtained
1	10	
2	10	
3	10	
4	10	
5	10	
6	10	
7	10	
8	10	
9	10	
10	10	
11	15	
12	15	
13	15	
14	15	
15	15	
16	15	
17	15	
18	15	
19	15	
20	15	

Total Marks Obtained:

Remarks:

INSTRUCTIONS

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).
   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक आदि)।
2. There are **TWENTY** questions printed in **ENGLISH & HINDI**
   इसमें बीस प्रश्न हैं अंग्रेजी और हिन्दी में छपे हैं।
3. **All questions are compulsory.**
   सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
4. The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
   प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिए गए हैं।
5. Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate, which must be stated clearly on the cover of this Question-Cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other that the authorized one.
   प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहिए जिसका उल्लेख आपके प्रवेश पत्र में किया गया है और उस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यूसीए) पुस्तिका के मुख्य पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिए। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिए गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
6. Word limit in questions, if specified, should be adhered to.
   प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिए।
7. Any page or portion of the page left blank in the Question-Cum-Answer Booklet must be clearly struck off.
   उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिए।

16-B, 2nd Floor, Above National Trust Building, Bada Bazar Marg, Old Rajinder Nagar, Delhi-110060

Plot No. 857, 1st Floor, Banda Bahadur Marg (Opp Punjab & Sindh Bank), Dr. Mukherjee Nagar Delhi- 110009

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Content Competence**
3. **Language Competence**
4. **Introduction Competence**
5. **Structure - Presentation Competence**
6. **Conclusion Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

1.

2.

3.

4.

5.

6.

All the Best

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

1. The Cholas are inextricably linked with the zenith of Dravidian art and architecture. Comment. (150 words) 10

चोल द्रविड़ कला और स्थापत्य की पराकाष्ठा से अनन्य रूप से संबद्ध हैं। टिप्पणी कीजिए।

सातवीं - 8वीं सदी में पल्लव शासकों के अधीन द्रविड़ कला का पर्याप्त विकास हुआ। लेकिन चोल शासकों द्वारा इसे पराकाष्ठा प्रदान की गई। दक्षिण भारत में कृष्णा नदी के दक्षिण में स्थापत्य की द्रविड़ कला का विकास हुआ।

☆ चोलों के अधीन द्रविड़ कला

① मंदिर स्थापत्य → इसमें चोलों द्वारा विशाल प्रवेश द्वारों अर्थात् गोपुरमों के निर्माण को बढ़ावा दिया गया साथ ही पिरामिडनुमा शिखर व विशालकाय मंदिर प्रांगण इसकी प्रमुख विशेषता है।
उदा. - तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर

② मूर्तिकला → मंदिर की दीवारों पर विभिन्न देवी-देवताओं की प्रतिमाओं का निर्माण किया गया इस दौरान नंदी की प्रतिमा, नटराज रूपी शिव आदि प्रमुख है।

③ चित्रकला → भक्ति आंदोलन से प्रेरित होकर चित्रकला के विकास को भी बढ़ावा दिया गया। इसमें गोपुरम, मंदिर की चारदीवारी आदि का अलंकरण प्रमुख था।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

(4) नृत्यकला → इस दौरान भरतनाट्यम का विकास हुआ जिसमें देवदासी प्रथा का प्रमुख योगदान रहा। इसके अलावा 'नटराज' के प्रतिमा भी नृत्यकला के विकास का प्रमुख साक्ष्य है।

(5) इसके अतिरिक्त अलवार व नयनार संतों द्वारा भक्ति गीतों की रचना भी की गई।

इस प्रकार स्पष्ट है कि महान चोल शासकों जैसे राजराज-I, राजेन्द्र-I आदि के शासनकाल में चोल स्थापत्य का विकास हुआ। यही कारण है कि यूनेस्को द्वारा महान चोल मंदिरों को विश्व विरासत स्थल का दर्जा दिया गया है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

2. Among the major legacies of the Indian freedom movement, civil liberties formed an important one. Analyse. (150 words) 10
भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रमुख विरासतों में, नागरिक स्वतंत्रता ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विश्लेषण कीजिए।

→ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के क्रमिक विकास तथा ~~इसमें~~ इसके विभिन्न चरणों ने मानवीय गरिमा के साथ-साथ मानवाधिकारों के विकास को बढ़ावा देने का कार्य किया।

लोकतंत्र, गणतंत्र, सार्वभौमिक मताधिकार आदि के साथ-साथ नागरिक स्वतंत्रता भी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रमुख विरासत सिद्ध हुई है।

* नागरिक स्वतंत्रता की महत्वपूर्ण भूमिका ↓

① 1928 की नेहरू रिपोर्ट → इस रिपोर्ट में भारतीय नागरिकों के लिए मूल अधिकारों की माँग को सर्वोपरि रखा गया।

② 1931 का कांग्रेस का कराची अधिवेशन → इस अधिवेशन में मानवाधिकारों की माँग की गई ताकि नागरिकों के सामाजिक-आर्थिक विकास को सुनिश्चित किया जा सके।

③ प्रेस की स्वतंत्रता → भारत ~~की~~ के स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा प्रेस की स्वतंत्रता पर जोर दिया गया ताकि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को

सुनिश्चित किया जा सके।

(4) सुभाषचंद्र बोस तथा जवाहरलाल नेहरू आदि द्वारा भी नागरिक स्वतंत्रता को सर्वोच्च माँग के रूप में रखा गया था।

परिणाम →

(1) स्वतंत्रता आंदोलन में नागरिक स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने की माँग का ही परिणाम था कि भारतीय संविधान में सभी नागरिकों को मूल अधिकार सुनिश्चित किए गए।

(2) सभी को सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार दिया गया।

(3) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को मूल अधिकार ~~माना~~ माना गया।

अतः स्पष्ट है कि स्वतंत्रता संग्राम की इस विरासत ने भारतीय लोकतंत्र को सुदृढ़ बनाने में अहम योगदान दिया है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

3. The Berlin Conference of 1884-85 in many ways set the ground for the scramble in Africa. Elucidate. **(150 words) 10**

1884-85 के बर्लिन सम्मेलन ने विभिन्न प्रकार से अफ्रीका में विभाजन का आधार तैयार किया। स्पष्ट कीजिए।

1880 के दशक तक समस्त अफ्रीका महाद्वीप का ~~का~~ केवल 10% भाग ही विदेशी शक्तियों के अधीन था लेकिन 20वीं सदी आते-आते केवल 10% भाग ही ऐसा बचा जो विदेशी उपनिवेश नहीं बन सका था। यह 1884-85 के बर्लिन सम्मेलन का ही परिणाम था।

☆ 1884-85 का बर्लिन सम्मेलन →

① इसमें यूरोपीय साम्राज्यवादी शक्तियां जैसे जर्मनी, ब्रिटेन, इटली, फ्रांस आदि शामिल हुए थे।

② इसमें इन साम्राज्यवादी शक्तियों के मध्य अफ्रीका के बँटवारे को लेकर सहमति बनी

③ यह सम्मेलन बिना किसी युद्ध के साम्राज्यवादी विस्तार के सर्वप्रमुख उदाहरणों में से एक है।

④ इसमें नाइजर नदी के पूर्व का भाग, इसके पश्चिम का भाग तथा काँगो नदी के दक्षिण का भाग क्रमशः इटली, फ्रांस व ब्रिटेन के बीच बँटवारे के रूप में स्वीकृत किया गया।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

परिणाम

① इस सम्मेलन के परिणामस्वरूप शांतिपूर्वक अफ्रीका के बहुत बड़े भू-भाग को साम्राज्यवादी शक्तियों के बीच बाँट दिया गया।

② अफ्रीका के प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन का मार्ग प्रशस्त हुआ।

③ रंगभेद, उपनिवेशवाद, ~~कबिलाई~~ को बढ़ावा मिला तथा अफ्रीका में कबीलाई संस्कृति को धक्का लगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि बर्लिन सम्मेलन अफ्रीकी उपनिवेशवाद के लिए प्रस्थान बिंदु साबित हुआ।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

4. What is a cloudburst and what are its effects? Why are they more frequent in the Himalayan region? **(150 words) 10**

बादल फटना क्या है और इसके क्या प्रभाव हैं? हिमालयी क्षेत्र में इनकी आवृत्ति अधिक क्यों है?

→ बादल फटने से तात्पर्य बहुत कम समय में एक निश्चित क्षेत्र में तीव्र बारिश का होना है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार 20-30 वर्ग किमी क्षेत्र में 1 घंटे के भीतर लगभग 100 mm बारिश का होना, बादल फटना कहलाता है।

★ प्रभाव

① कम समय में तीव्र बारिश से 'फ्लैश फ्लड' की संभावना बढ़ जाती है।

② भू-स्खलन जैसी प्राकृतिक आपदा

③ 'मड फ्लो', भारी मात्रा में आर्थिक नुकसान।

④ जान-माल की हानि

⑤ मृदा अपरदन की तीव्रता आदि।

★ हिमालय क्षेत्र में अधिक आवृत्ति क्यों?

① हिमालय के दक्षिणी ढाल के सहारे मानसूनी पवनें ऊपर-चढ़कर अचानक ठंडी होकर भारी मात्रा में वर्षा कर देती है।

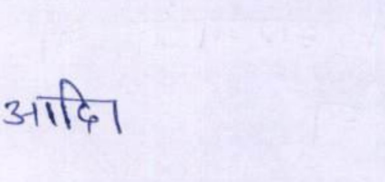

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

② यह प्राकृतिक परिघटना मुख्यत: जुलाई माह में घटित होती है।
उदा.— हाल ही में हिमाचल प्रदेश में बादल फटने की घटना।
क्योंकि इस दौरान तापमान अधिक रहता है अत: पवनों द्वारा अधिक आर्द्रता ग्रहण की जा सकती है → तापमान अचानक से गिरने पर भारी वर्षा।

③ इस दौरान हिंद महासागर से आने वाली मानसूनी पवनें अधिक आर्द्रता साथ लाती हैं।

④ जलवायु परिवर्तन → WMO के अनुसार हिमालयी क्षेत्र में तापमान बढ़ोतरी अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक हुई है अत: बादल फटने जैसी घटनाओं की बारंबारता में बढ़ोतरी हुई है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि नीति निर्माताओं द्वारा पेरिस समझौते को लागू करते हुए वैश्विक ताप वृद्धि को 1.5°C से कम पर रोकने हेतु गंभीर प्रयास करने होंगे।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

5. Despite its potential, there are several challenges in the implementation of the Ken-Betwa Link Project. Discuss. **(150 words) 10**

केन-बेतवा लिंक परियोजना की क्षमता के बावजूद, इसके कार्यान्वयन में अनेक चुनौतियां विद्यमान हैं। चर्चा कीजिए।

भारत की नदी जोड़ो परियोजना के एक प्रमुख हिस्से के रूप में केन-बेतवा नदी को जोड़कर केन नदी से अतिरिक्त पानी को जल की कमी वाली बेतवा नदी में पहुंचाया जायेगा।

* परियोजना के फायदे

① बेतवा नदी में पर्याप्त पानी आने से बुंदेलखंड क्षेत्र में पानी की समस्या का समाधान

② सिंचित क्षेत्र में बढ़ोतरी लगभग 10 लाख हेक्टेयर कृषि क्षेत्र लाभांवित होगा।

③ पेयजल सुविधा का विस्तार होगा

④ जल विद्युत क्षमता का विकास हो सकेगा।

⑤ इन सभी का संयुक्त परिणाम लोगों की आजीविका सुधारने के रूप में होगा।

* कार्यान्वयन में चुनौती

① केन नदी 'पन्ना बायोस्फेयर रिजर्व' से होकर बहती है अतः इसका बड़ा हिस्सा डूब क्षेत्र में आ जायेगा।

② वनस्पतिजात के साथ - साथ प्राणिजात खासकर वन्यजीवों को इससे नुकसान होगा।

③ लोगों के विस्थापन की समस्या।

④ क्योंकि केन नदी - बेतवा की तुलना में नीचे क्षेत्र से बहती है अतः लिफ्ट कैनाल की आवश्यकता होगी → फलतः आर्थिक लागत बढ़ेगी।

⑤ उत्तरप्रदेश व मध्यप्रदेश के मध्य 'जल विवाद' पैदा हो सकता है।

⑥ पर्यावरण संबंधी चिंताए।

☆ आगे की राह

① केन्द्र सरकार द्वारा उचित हस्तक्षेप तथा विभिन्न हितधारकों के मध्य समझौता व आपसी समझ के माध्यम से परियोजना को बढ़ावा दिया जाये लेकिन साथ ही पर्यावरण संबंधी चिंताओं का उचित निदान भी किया जाना आवश्यक है।

6. Identify the issues related to production and supply of coal in India. How can these issues be addressed? **(150 words) 10**

भारत में कोयले के उत्पादन और आपूर्ति से संबंधित मुद्दों की पहचान कीजिए। इन मुद्दों का समाधान किस प्रकार किया जा सकता है?

→ भारत विश्व में कोयले का ~~दूसरा~~ पाँचवा सबसे बड़ा उत्पादक होने के बावजूद विश्व के सबसे बड़े कोयला आयातकों में शामिल है। क्योंकि भारत में तापीय ऊर्जा पर निर्भरता अभी भी 50% से ज्यादा है।

* उत्पादन संबंधी मुद्दे

① अधिकांश कोयला गैर-कोकिंग श्रेणी का।
② कोयले के भंडारों का असमान वितरण।
③ खनन की अवैज्ञानिक व अकुशल तकनीक।
④ मशीनीकरण का अभाव।

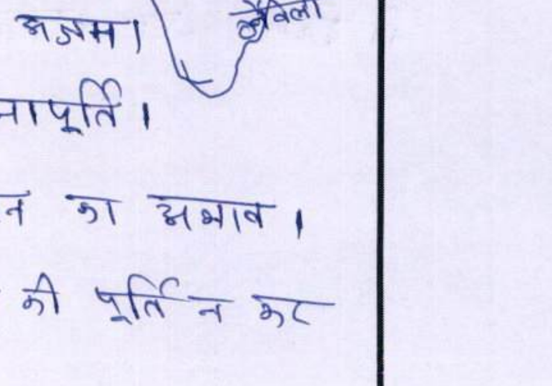

* आपूर्ति संबंधी मुद्दे

① परिवहन लागत ज्यादा।
② मांग को पूरा कर पाने में अक्षम।
③ घटिया श्रेणी के कोयले की आपूर्ति।
④ आपूर्ति श्रृंखला में लचीलापन का अभाव।
⑤ सरकारी कंपनियों द्वारा मांग की पूर्ति न कर पाना।

☆ समाधान

① खनन में नई तकनीकों के साथ-साथ मशीनीकरण को बढ़ावा दिया जाए।

② खनन के लिए लाइसेंस में पारदर्शिता बढ़ाई जाए।

③ आपूर्ति श्रृंखला में लचीलापन लाया जाए।

④ नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा दिया जाए।

⑤ आपूर्ति में रियल-टाइम ट्रैकिंग को बढ़ावा देकर कालाबाजारी को रोका जाए।

इस प्रकार तापीय ऊर्जा की बजाए नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देकर कोयले पर निर्भरता को कम करने के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन की समस्या का समाधान भी किया जा सकता है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

7. Present the geographical distribution of agro-based industries in India and discuss the challenges faced by them. **(150 words) 10**

भारत में कृषि-आधारित उद्योगों के भौगोलिक वितरण को प्रस्तुत कीजिए और उनके समक्ष आने वाली चुनौतियों की विवेचना कीजिए।

कृषि आधारित उद्योगों से तात्पर्य उन उद्योगों से है जो कच्चे माल हेतु कृषि व संबद्ध क्रियाकलापों पर निर्भर रहते हैं। जैसे सूती वस्त्र उद्योग, डेयरी उद्योग आदि।

☆ कृषि आधारित उद्योगों का भौगोलिक वितरण

① सूती वस्त्र उद्योग → मुंबई, अहमदाबाद आदि जैसे स्थानों पर उचित जलवायु व कच्चे माल की उचित आपूर्ति के कारण पर्याप्त विकास।

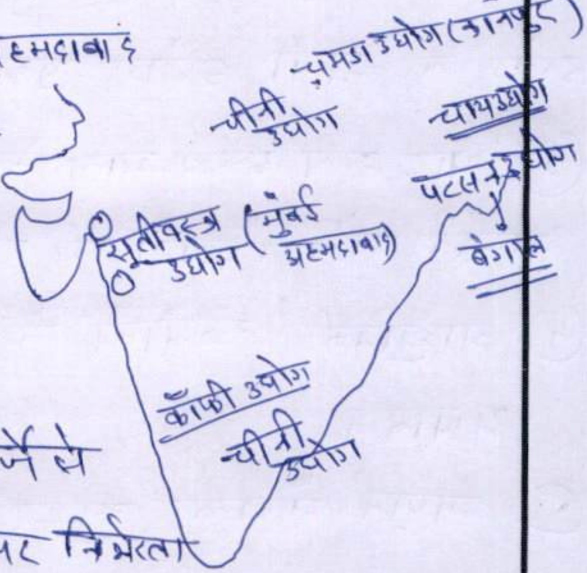

② चीनी उद्योग → गन्ने जैसे भार ह्रास वाले कच्चे माल पर निर्भरता के कारण उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र व तमिलनाडु में अधिक संकेन्द्रित।

③ पटसन उद्योग → मुख्यतः बंगाल में केन्द्रित

④ चाय व कॉफी उद्योग → कच्चा माल उत्पादक क्षेत्र क्रमशः बंगाल, असम तथा दक्षिण भारत में केरल कर्नाटक आदि स्थानों पर।

(5) चमड़ा उद्योग → मुख्यतः कानपुर में केन्द्रित।

* चुनौतियाँ

(1) कच्चे माल की आपूर्ति में पर्याप्त उतार-चढ़ाव।

(2) जलवायु-परिवर्तन का कपास, गन्ने जैसी फसलों के उत्पादन पर प्रभाव अतः सूती वस्त्र उद्योग व चीनी उद्योग प्रभावित।

(3) भार ह्रास कच्चे माल के कारण कच्चे माल की आपूर्ति वाले स्थानों पर ही अवस्थिति जरूरी।

(4) आधुनिकी तकनीकों के समावेशन का अभाव।

(5) आपूर्ति श्रृंखला सुदृढ़ नहीं

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारत जैसे कृषि प्रधान देश में बड़ी जनसंख्या को रोजगार के अवसर प्रदान करने में यह क्षेत्र प्रमुख भूमिका निभाता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

8. The caste system continues to be one of the key drivers of poverty and inequality in India. Discuss. **(150 words) 10**

जाति व्यवस्था भारत में निर्धनता और असमानता के प्रमुख चालकों में से एक बनी हुई है। विवेचना कीजिए।

→ जाति व्यवस्था भारत में सामाजिक वर्गीकरण का एक प्रमुख आधार है। उत्तर वैदिक काल में यह व्यवस्था जन्म आधारित हो गई। 'बंद व्यवस्था' होने के कारण इससे बाहर निकलना संभव नहीं हो पाता।

जाति व्यवस्था निर्धनता व असमानता का प्रमुख चालक क्यों?

① निचली जातियों का ऐतिहासिक पिछड़ापन तथा ऐतिहासिक शोषण।

② बंद व्यवस्था होने के कारण इससे बाहर निकलना संभव नहीं।

③ दलित व पिछड़ी जातियों का संसाधनों पर कम स्वामित्व।

④ रिपोर्ट के मुताबिक भारत में प्रत्येक 6 में से 5 बहुआयामी गरीब दलित व पिछड़ी जातियों से है।

⑤ अनुसूचित जनजाति व SC, में कम साक्षरता का होना → क्रमशः 59% व 66%. अतः रोजगार के कम अवसर।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

⑥ पैतृक रूप से कम उत्पादक संसाधनों पर नियंत्रण।

⑦ ऐतिहासिक रूप से वंचना के शिकार।

⑧ SCs व STs में गरीबी की दर का ज्यादा होना।

इस प्रकार स्पष्ट है कि जाति व्यवस्था वर्तमान में भी असमानता व निर्धनता का प्रमुख चालक है। हालांकि सरकार द्वारा स्टैंड अप इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, गोबरधन योजना आदि के माध्यम से इसके प्रभावों को कम करने का प्रयास किया जा रहा है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

9. Discuss the issues faced by domestic workers in India. Also suggest measures that can be taken to empower them. **(150 words) 10**
भारत में घरेलू कामगारों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं की विवेचना कीजिए। साथ ही, उन्हें सशक्त बनाने हेतु किये जा सकने वाले उपायों का भी सुझाव दीजिए।

घरेलू कामगारों से तात्पर्य कामगारों की उस श्रेणी से है जो मुख्यत: नियोक्ताओं के घर पर रहकर ~~आम~~ घरेलू कार्यों को संपन्न करते हैं। इसमें महिलाओं व बच्चों की संख्या सर्वाधिक है।

इनके समक्ष समस्याएँ

1. अनौपचारिक क्षेत्रक होने के कारण पर्याप्त आँकड़ो का अभाव।
2. सामाजिक सुरक्षा से वंचना।
3. घर पर ही कार्य करने के कारण काम का अतिरिक्त बोझ।
4. ~~वि~~ उचित विनियमन का अभाव
5. कई अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि इनके काम के घंटे तुलनात्मक रूप से ज्यादा होते हैं लेकिन वेतन कम होता है।
6. बंधुआ मजदूरी जैसी समस्याएँ।
7. बच्चों को शिक्षा का न मिल पाना।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

(8) मानवाधिकारों का हनन।

(9) जागरूकता का अभाव

☆ सशक्तिकरण हेतु उपाय

(1) किसी अम्ब्रेला स्कीम के अंतर्गत एक समर्पित नीति बनाई जाए जिसमें इनकी सामाजिक सुरक्षा के साथ-साथ उचित वेतन का निर्धारण किया जाए।

(2) नियोक्ताओं को उचित सुझाव दिए जाएं।

(3) काम के घंटे तय किए जाएं।

(4) सर्वे के माध्यम से पर्याप्त आंकड़े जुटाये जाएं।

(5) कम उम्र के बच्चों का रिहैबीलिटेशन।

इस प्रकार इस अनौपचारिक क्षेत्रक में संलग्न कामगारों के मानवाधिकारों को सुनिश्चित किया जा सकता है।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

10. Given the deeply gendered impact of population control measures, examine the need to rethink the current approach of population control measures in India. **(150 words) 10**

जनसंख्या नियंत्रण संबंधी उपायों के गहन लैंगिक प्रभाव को देखते हुए, भारत में जनसंख्या नियंत्रण उपायों के वर्तमान दृष्टिकोण पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता का परीक्षण कीजिए।

भारत में बढ़ती जनसंख्या (2024 तक सबसे अधिक जनसंख्या की संभावना) के नियंत्रण हेतु विभिन्न उपायों के प्रभाव एक ही लिंग खासकर महिलाओं को अधिक प्रभावित कर रहे हैं जैसे →

① पुरुष नसबंदी की बजाए महिला नसबंदी पर अधिक जोर → इसके पीछे पितृसतात्मक मानसिकता का प्रभाव है।

② कोन्ट्रासेप्टिव पिल्स का अधिक सेवन

③ उचित जागरूकता का अभाव।

उपायों के वर्तमान दृष्टिकोण पर पुनर्विचार की आवश्यकता →

① चूँकि भारत में NFHS-5 के आँकडो के मुताबिक TFR 2.0 पर आ गई है जो कि रिप्लेसमेंट रेट 2.1 से कम है अतः इस वर्तमान दृष्टिकोण में परिवर्तन की आवश्यकता है।

② महिला नसबंदी की बजाए पुरुष नसबंदी

के परिणाम ज्यादा अपेक्षित होते हैं अतः इस संबंध में जागरूकता बढाने की आवश्यकता है।

(3) महिलाओं में उनके जनन अधिकारों को लेकर जागरूकता बढायी जाने की आवश्यकता है।

(4) गर्भनिरोधकों की उपलब्धता बढायी जाए।

(5) साक्षरता को बढावा दिया जाए।

इस प्रकार स्पष्ट है कि लोगों की बीच जागरूकता बढाकर उन्हें पितृसत्तात्मक मानसिकता से बाहर निकालने का प्रयास किया जाना चाहिए।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

11. Examine the impact of the Sramana tradition on the Vedic religion and its relation with the emergence of Jainism, Buddhism and Ajivika sects.

(250 words) 15

श्रमण परंपरा के वैदिक धर्म पर प्रभाव और जैन, बौद्ध तथा आजीवक संप्रदायों के उद्भव के साथ इसके संबंध का परीक्षण कीजिए।

श्रमण परंपरा पारंपरिक वैदिक धर्म की मान्यताओं का खंडन करते हुए निवृत्ति मार्ग को बढ़ावा देने के साथ-साथ वेदों की शाश्वतता को नकारती है।

इस परंपरा में गृहत्याग कर निवृत्ति मार्ग को अपनाकर घूम-घूम कर उपदेश दिए जाते हैं तथा संयमित जीवन जिया जाता है।

वैदिक धर्म पर प्रभाव →

1. वैदिक धर्म की मान्यताओं का खंडन किया गया।
2. वेदों की शाश्वतता को नकारा गया
3. प्रवृत्ति मार्ग की जगह निवृत्ति मार्ग पर बल।
4. गृहस्थ जीवन की जगह गृह त्याग पर जोर दिया गया।

फलतः वैदिक धर्म से असंतुष्ट

लोग इस ओर आकर्षित हुए।

* जैन धर्म के उद्भव से संबंध

① जैन धर्म का उद्भव अत्यंत प्राचीन माना जाता है। क्योंकि इनके 24वें तीर्थंकर बौद्ध धर्म के संस्थापक महात्मा बुद्ध के समकालीन थे।

② लेकिन जैन धर्म भी श्रमण परंपरा की तरह वेदों का खंडन करता है।

③ विचारों की स्थापना इसे श्रमण परंपरा के नजदीक लाती है।

④ इसमें भी निवृत्ति पर अधिक जोर दिया गया है।

* बौद्ध धर्म

① महात्मा बुद्ध द्वारा भी वेदों का खंडन किया गया।

② ब्राह्मण धर्म का विरोध किया गया।

③ घूम-2 कर उपदेश दिए गए।

④ इच्छाओं को सभी दुखों का कारण माना गया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

(8) चैत्य व विहारों की स्थापना की गई।

✱ आजीवक संप्रदाय

(1) ये लोग भी गृह त्याग कर गुफाओं में जीवन व्यतीत करते थे।

(2) निवृत्ति मूलक जीवन को बढ़ावा दिया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि श्रमण परंपरा ने वैदिक धर्म में पैदा हुई कई बुराइयों के शमन का प्रयास कर संतुलन स्थापना का प्रयास किया गया इसी का परिणाम था कि महात्मा बुद्ध ने बीच का मार्ग निकालकर 'मध्यम मार्ग' को बढ़ावा दिया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

12. Shed light on the use of symbols and symbolic language by Mahatma Gandhi for both, integrating masses into the National Movement and against social evils. **(250 words) 15**

महात्मा गांधी द्वारा राष्ट्रीय आंदोलन में जनता को लामबद्ध करने हेतु और सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध, दोनों के लिए किए गए प्रतीकों और प्रतीकात्मक भाषा के उपयोग पर प्रकाश डालिए।

उग्रवादियों, उदारवादियों व क्रांतिकारियों की विफलता ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अगले चरण में गाँधीवादी आंदोलन का मार्ग प्रशस्त किया। इन्होंने प्रतीक व प्रतीकात्मक भाषा की मदद से स्वतंत्रता संग्राम ~~आंदोलन~~ को जन आंदोलन में तब्दील कर दिया।

★ प्रतीकात्मक भाषा

① सत्याग्रह → सत्य का आग्रह अर्थात मन वचन व कर्म में सत्यता के पालन पर जोर देकर इस नैतिक शक्ति के आगे ब्रिटिश सत्ता को झुकने के लिए मजबूर किया। इससे जनता की भागीदारी बढ़ी।

② अहिंसा → इससे सामान्य जन भी आंदोलन की तरफ आकर्षित हुआ फलतः संग्राम में प्रत्येक वर्ग की भागीदारी बढ़ती गई।

③ <u>सर्व धर्म समभाव</u> → इससे धर्मों के बीच एकता को बढ़ावा देकर सांप्रदायिकता जैसी सामाजिक बुराई के ~~दमन~~ शमन का प्रयास किया गया।

☆ <u>प्रतीक</u>

① नमक → सविनय अवज्ञा आंदोलन में नमक जैसा प्रतीक हर घर को आंदोलन में आकर्षित कर पाने में सक्षम हुआ क्योंकि यह न तो सांप्रदायिक था, न धार्मिक बल्कि सबकी आवश्यकता था।

② चरखा → इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था व कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देकर आत्मनिर्भरता का प्रयास किया गया।

③ <u>जन सामान्य की वेश भूषा</u> → इससे सामान्य जन अपने नायक के साथ तादात्म्य स्थापित कर सका फलतः जनता को लामबद्ध करने में आसानी हुई।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

इन सबके अतिरिक्त हृदय परिवर्तन, मंदिर प्रवेश, साधारण जीवन शैली, आदि प्रतीक व प्रतीकात्मक भाषा के माध्यम से गाँधी जी द्वारा सामाजिक बुराइयों को दूर करने के साथ-साथ जनता को लामबद्ध किया गया।

यह गाँधी जी के प्रतीक व प्रतीकात्मक भाषा का ही परिणाम था कि भारत नैतिक शक्ति के दम पर ब्रिटेन जैसी साम्राज्यवादी शक्ति को झुका पाया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

13. Giving a brief overview of the three Carnatic Wars, discuss the factors that led to the success of the British against the French in the struggle for control over India. **(250 words) 15**

तीन कर्नाटक युद्धों का संक्षिप्त विवरण देते हुए, उन कारकों पर चर्चा कीजिए जिनके कारण भारत पर नियंत्रण के लिए संघर्ष में फ्रांसीसियों के विरुद्ध अंग्रेजों को सफलता प्राप्त हुई।

→ 18वीं सदी में भारत व यूरोप की परिस्थितियों के कारण 1746 से लेकर 1764 तक की अवधि में फ्रांस व अंग्रेजों के मध्य तीन युद्ध लड़े गए जिनमें अंततः अंग्रेजों की विजय हुई तथा भारत पर एकमात्र साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में उनका उदय हुआ।

① प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746) → इसकी शुरुआत फ्रांसीसी बस्ती पर हमले के कारण हुई तथा एक्स ला चैपल संधि के माध्यम से इसका अंत हुआ।

② द्वितीय कर्नाटक युद्ध → यूरोप में फ्रांस व ब्रिटेन के मध्य आपसी तनाव ने भारतीय उपनिवेश में उनके मध्य टकराव को बढ़ावा दिया। पांडिचेरी की संधि के साथ इस युद्ध का अंत हुआ।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

③ तृतीय कर्नाटक युद्ध → यह सप्तवर्षीय युद्ध का परिणाम था। इसी के दौरान वांडिवॉश के युद्ध (1760) में अंग्रेजो द्वारा फ्रांस को निर्णायक रूप से पराजित किया गया। 'पेरिस की संधि' के द्वारा इस युद्ध का अंत हुआ।

फ्रांसीसियों के विरुद्ध अंग्रेजी सफलता के कारण →

① फ्रांसीसी कंपनी का सरकारी होना → इससे तीव्र निर्णय में बाधा उत्पन्न होती थी जबकि अंग्रेजी EIC निजी होने के कारण निर्णय-निर्माण तेजी से हो पाता था।

② अंग्रेजी नौसेना की श्रेष्ठता → स्पेन को हराने के बाद ब्रिटिश नौसेना सर्वोच्च शक्ति बन गई। इससे भारत में उनकी श्रेष्ठता का आधार तैयार हुआ।

③ ब्रिटिश EIC का बंगाल जैसे क्षेत्र पर नियंत्रण; ~~इसे~~ इससे ब्रिटिश कंपनी आर्थिक रूप से सुदृढ़

हो सकी। इससे उनकी आर्थिक शक्ति बढ़ी।

④ श्रेष्ठ नौसेना के कारण तीव्र संचार व तीव्र आवागमन

⑤ ब्रिटिश कंपनी की बागडोर उचित हाथों में थी तथा उसके नेतृत्व में निरंतरता थी जबकि फ्रांसीसी कंपनी के सरकारी होने के कारण नेतृत्व में फेरबदल ज्यादा होता था।

इस प्रकार अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों को परास्त कर भारत की लूट पर एकाधिकार स्थापित किया था।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

14. Provide an account of the issues that led to a crisis in Punjab in the 1980s. Also, discuss the roadmap to peace that was eventually adopted.

(250 words) 15

1980 के दशक में पंजाब में संकट उत्पन्न करने वाले मुद्दों का विवरण प्रस्तुत कीजिए। साथ ही, शांति स्थापना की उस रूपरेखा पर चर्चा कीजिए जिसे अंततः अपनाया गया था।

1980 में खालिस्तान की मांग जैसे पृथकतावादी आंदोलन की परिणति 1984 में भारतीय प्रधानमंत्री की हत्या के रूप में हुई। इस संकट को उत्पन्न करने वाले मुद्दे निम्न थे →

① 1947 में देश का धर्म के आधार पर बंटवारा → इससे सिक्ख बाहुल्य पंजाब प्रांत दो हिस्सों (दो देशों) में बंट गया → सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिला।

② 1966 में हरियाणा व हिमाचलप्रदेश के पंजाब से अलग हो जाने से पंजाब को सिक्ख बाहुल्य प्रांत के रूप में अलग पहचान मिली।

③ हरित क्रांति की सफलता ने पंजाब को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाया।

④ गोल्डन ट्रायंगल से निकटता ने धनशोधन को बढ़ावा दिया साथ ही नशाखोरी में भी तेजी आई।

(5) देश विरोधी ताकतों व धार्मिक तत्वों द्वारा अखिल पंजाब के निर्माण की मांग

(6) खालिस्तान समर्थकों द्वारा खालिस्तान की उग्रवादी माँग की आतंकवाद में परिणति।

(7) इससे पंजाब में अलगाववादी शक्तियां सक्रिय हुई → आतंकवाद को बढ़ावा मिला → 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' चलाकर इस मांग व आतंकवाद तथा अलगाववाद पर चोट की गई → स्वर्ण मंदिर को क्षति पहुंचने से सिक्ख भावना आहत → प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की हत्या → दिल्ली में सिक्ख दंगे। ⇒ ~~राजीव~~ राजीव गाँधी के साथ शांति समझौता

★ शांति स्थापना की रूपरेखा

(1) 1985 में लोंगोवाला समझौता के माध्यम से शांति स्थापना का प्रयास।

(2) सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा दिया गया।

(3) सिक्ख विरोधी दंगों की जाँच हेतु समिति

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

का गठन।

(4) शांति स्थापना का प्रयास।

(5) निर्दोष गिरफ्तारों को रिहा किया गया।

इस प्रकार पंजाब में शांति स्थापना के प्रयासों के साथ-साथ आपसी सद्भाव को बढ़ावा देकर विकास में तेजी लायी गई।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

15. Give a brief account of the distribution of installed capacity of solar power in India. Highlighting the challenges in proper utilisation of solar energy, mention the steps taken by the government to promote it in India. **(250words) 15**

भारत में सौर ऊर्जा की संस्थापित क्षमता के वितरण का संक्षिप्त विवरण दीजिए। सौर ऊर्जा के उचित उपयोग में विद्यमान चुनौतियों को रेखांकित करते हुए, भारत में इसे बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों का उल्लेख कीजिए।

→ भारत की संस्थापित ऊर्जा क्षमता में सौर ऊर्जा का योगदान लगभग 11% है। नए राष्ट्रीय प्राथमिकता लक्ष्यों में इसके उत्पादन का लक्ष्य बढ़ाकर 100GW कर दिया गया है।

☆ संस्थापित क्षमता का वितरण

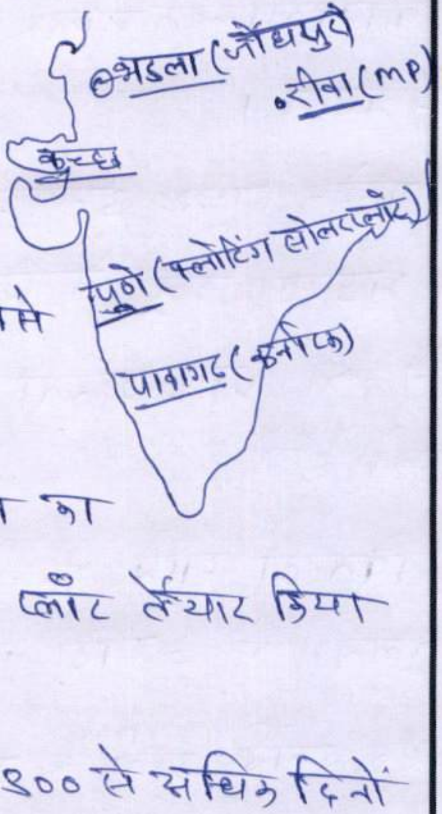

① राजस्थान → राजस्थान के ~~...~~ जोधपुर में स्थित भड़ला सोलर प्लांट विश्व का सबसे बड़ा सोलर प्लांट है।

② महाराष्ट्र → पुणे में भारत का सबसे बड़ा तैरता हुआ सोलर प्लांट तैयार किया गया है।

③ गुजरात → गुजरात में 300 से अधिक दिनों तक पर्याप्त सौर ~~ऊर्जा~~ विकिरण की प्राप्ति ने सौर ऊर्जा को बढ़ावा दिया है।

④ कर्नाटक → देश का अग्रणी सौर ऊर्जा उत्पादक

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

राज्यों में शामिल । पावागढ़ में वृहद संयंत्र की स्थापना

(8) इसके अतिरिक्त मध्यप्रदेश के रीवा में तथा तमिलनाडु में भी सौर ऊर्जा के उत्पादन को बढ़ावा दिया जा रहा है।

④ उपयोग में विद्यमान चुनौती

① फोटोवोल्टिक सेलों के निर्माण हेतु विदेशों पर निर्भरता।

② प्रत्येक समय उत्पादन संभव नहीं अत: ऊर्जा के भंडारण हेतु बैटरियों में पर्याप्त निवेश करने की आवश्यकता → आर्थिक लागत बढ़ती है।

③ वितरण हानि ऊर्जा के अन्य माध्यमों की तुलना में ज्यादा।

④ एक इकाई ऊर्जा के उत्पादन हेतु अधिक भूमि की आवश्यकता जबकि भू संसाधन सीमित है।

⑤ सोलर प्लांट स्थापित करने की आरंभिक

लागत का ज्यादा होना।

सरकार के कदम

① अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन → इसका मुख्यालय गुरुग्राम में स्थित है।

② कुसुम योजना → इसके तहत किसानों के पंपों का सोलराइजेशन किया जा रहा है।

③ राष्ट्रीय सोलर मिशन → इसके तहत सौर ऊर्जा के उत्पादन के लक्ष्य को बढ़ाकर 100 GW कर दिया गया है।

④ वन सन वन वर्ल्ड वन ग्रिड → इसके तहत समस्त विश्व में एक ग्रिड की स्थापना पर बल दिया जा रहा है।

⑤ स्ट्रीट लाइटों का सोलराइजेशन।

इस प्रकार स्पष्ट है कि नवीकरणीय ऊर्जा सततपोषणीय विकास को बढ़ावा देने में अत्यंत सहायक सिद्ध होगी।

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

16. Post-drift theories based on ocean floor mapping provided new dimensions to the study of distribution of oceans and continents. Elaborate.

(250 words) 15

महासागरीय-अधस्तल के मानचित्रण पर आधारित उत्तरवर्ती प्रवाह सिद्धांत ने महासागरों और महाद्वीपों के वितरण के अध्ययन को नए आयाम प्रदान किए हैं। सविस्तार वर्णन कीजिए।

• आरंभ में वेगनर द्वारा महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत में 'Jig saw fit' जैसे प्रमाणों व वानस्पतिक प्रमाणों द्वारा महासागर-महाद्वीप वितरण को समझाने का प्रयास किया गया। लेकिन हैरी हेस का सागर नितल प्रसरण होम्स का 'संवहनीय तरंग सिद्धांत' तथा महाद्वीपीय प्रवाह सिद्धांत ने इस अध्ययन को नए आयाम प्रदान किए हैं →

(A) हैरी हेस का सागर नितल प्रसरण →

(1) इसके अनुसार मध्य महासागरीय कटकों के सहारे निरंतर लावा के उद्भेदन से महासागरीय क्रस्ट का निर्माण होता है।

(2) वहीं गर्तों के सहारे महासागरीय क्रस्ट का विनाश होता है।

(3) मध्य अटलांटिक कटक के पास महासागरीय

क्रस्ट की नवीनता व इससे दूर जाने पर इसका प्राचीन होते जाना इस सिद्धांत को साबित करता है।

(B) आर्थर होम्स का संवहनीय तरंग सिद्धांत

(1) इसके मुताबिक पृथ्वी के आंतरिक भाग में संवहनीय तरंगों की उत्पत्ति के कारण ~~[illegible]~~ मैग्मा का ऊर्ध्व व क्षैतिज संचरण होता है तथा एक चक्र का निर्माण होता है।

(2) इसके लिए पृथ्वी का घूर्णन व 'churning motion' जिम्मेदार होता है।

(C) महाद्वीपीय प्रवाह सिद्धांत

(1) इसके मुताबिक समस्त भू-पर्पटी (क्रस्ट) को 7 बड़ी प्लेटों व कई छोटी प्लेटों में विभक्त किया गया है।

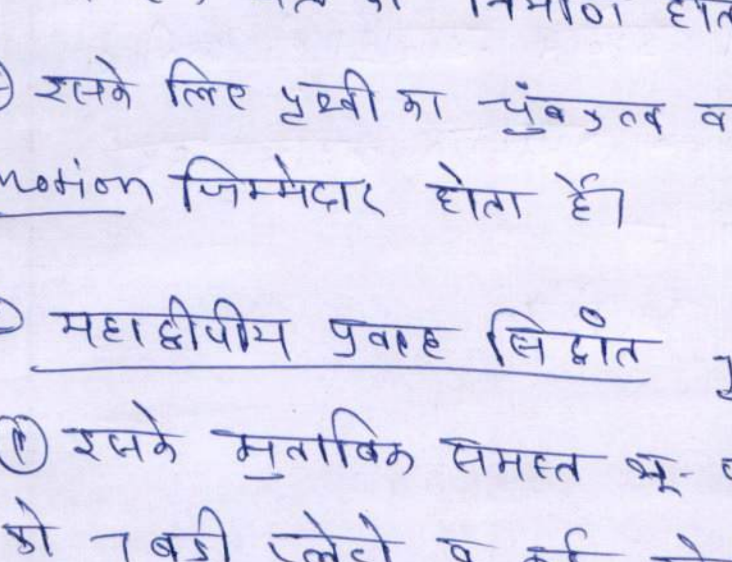

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

निष्कर्ष –

① इन सिद्धांतों के अनुसार महाद्वीपीय क्रस्ट अधिक प्राचीन हैं ~~लगभग~~

② महासागरीय क्रस्ट नवीन होने के साथ-साथ यह निरंतर विनाशशील (गर्तों के पास) व निरंतर निर्मित है (कटकों के सहारे)

③ इन सिद्धांतों से द्वीपों के निर्माण, वलित पर्वतों के निर्माण, आर्किपेलेगो आदि के उद्भव की उचित व्याख्या हो पाती है

④ ~~इस~~ कटकों की उपस्थित लगभग हर महासागर में है

आदि।

17. Explain the phenomenon of heat waves. Also, enumerate the conditions favourable for the development of heat waves in India and their associated health impacts. **(250 words) 15**

हीट वेव्स की परिघटना की व्याख्या कीजिए। साथ ही, भारत में हीट वेव्स के विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियों और उनसे संबद्ध स्वास्थ्य प्रभावों को सूचीबद्ध कीजिए।

→ भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार मैदानों में तापमान के 40°C तथा पहाड़ों पर 30°C हो जाने पर लगातार 5 दिनों तक ~~का~~ दैनिक ~~औ~~ तापमान उस स्थान के औसत तापमान से 5-6°C ज्यादा हो जाए तो यह स्थिति हीट वेव्स की परिघटना कहलाती है।

अर्थात् यह परिघटना तापमान में वृद्धि का परिणाम है।

भारत में इसके विकास हेतु अनुकूल परिस्थिति

① चूँकि भारत उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है अत: सूर्य के उत्तरायण के दौरान मुख्यत: मई, जून, जुलाई आदि माहों में तापमान बढ़ने पर हीट वेव्स की परिघटना ~~घटित~~ घटित होती है।

② इसमें उच्च दाब की स्थिति बन जाती है

फलतः बादलों का निर्माण नही हो जाता, अतः मौसम में शुष्कता बढ़ जाती जिससे इसका प्रभाव और ज्यादा बढ़ जाता है।
यह 'हीट डोम' का निर्माण करता है।
उदा→ अमेरिका के कैलिफोर्निया में 2021 में आई खतरनाक हीट वेव

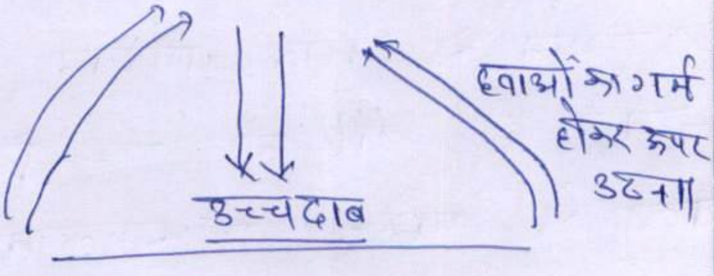

(3) भारत में सूर्य के उत्तरायण के साथ ITCZ के उत्तर में खिसकने से तापमान में बढ़ोतरी होती है।
(4) पश्चिम से आने वाली धूलभरी हवाओं से भी इसका प्रभाव बढ़ जाता है।
(5) जलवायु परिवर्तन व भूमंडलीय तापन के कारण औसत ताप में वृद्धि होना।

☆ स्वास्थ्य पर प्रभाव

(1) हीट वेव्स के कारण जान माल की हानि हो सकती है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

② लोग घरों से बाहर निकलकर कार्य नहीं कर पाते → आर्थिक हानि।

③ मिचली, सिरदर्द जैसी समस्याएं।

④ धरातलीय ओजोन की सांद्रता बढ़ जाने से प्रदूषण में वृद्धि

⑤ AC, रेफ्रीजरेटर की माँग बढ़ने से GHG, का उत्पादन बढ़ेगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भूमंडलीय तापन के कारण पिछले कुछ वर्षों से भारत में हीट वेव्स की बारंबारता लगातार बढ़ी है अतः इस दिशा में उचित कदम उठाते हुए पेरिस समझौते को तत्काल प्रभाव से लागू किया जाना चाहिए।

18. Providing an account of distribution of rainforests across the world, mention their key characteristics. Also highlight the threats that are being faced by tropical rainforests. **(250 words) 15**

विश्व भर में वर्षावनों के वितरण का विवरण प्रस्तुत करते हुए, उनकी प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। साथ ही, उष्णकटिबंधीय वर्षावनों द्वारा सामना किए जा रहे खतरों को भी रेखांकित कीजिए।

→ ये वन मुख्यत: उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन व शीतोष्णकटिबंधीय सदाबहार वनों के रूप में पाये जाते हैं।

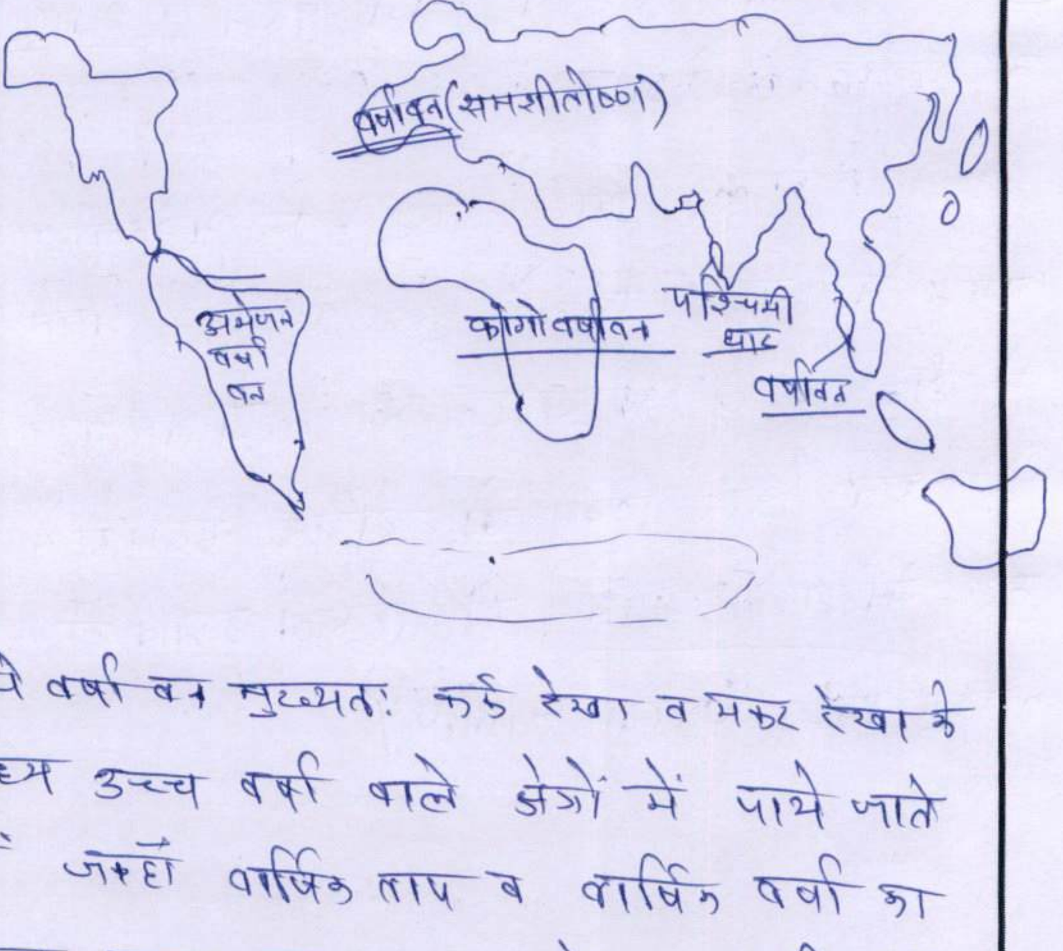

• ये वर्षा वन मुख्यत: कर्क रेखा व मकर रेखा के मध्य उच्च वर्षा वाले क्षेत्रों में पाये जाते हैं जहाँ वार्षिक ताप व वार्षिक वर्षा का उच्च स्तर पाया जाता है साथ ही ब्रिटिश जलवायु वाले क्षेत्रों में भी वर्षावन पाये

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जाते हैं जहां वर्षभर वर्षा होती है।

* प्रमुख विशेषताएं

① औसत वर्षा → औसत वार्षिक वर्षा 250 सेमी से ज्यादा।

② औसत तापमान उष्णकटिबंधों में 25°C से ज्यादा पाया जाता है।

③ वनस्पति में कई स्तरों का पाया जाना इसकी प्रमुख विशेषता है। वृक्षों में सूर्यताप की प्राप्ति हेतु स्पर्द्धा अतः वृक्षों की ऊंचाई अधिक।

④ मृदा का ऊपरी स्तर अधिक उपजाऊ नहीं होता

⑤ इन्हें 'पृथ्वी के फेंफडों' (अमेजन वर्षा वन) की संज्ञा दी जाती है।

⑥ वृक्षों का घनत्व उच्च पाया जाता है।

⑦ इनमें मुख्यतः जनजातियां निवास करती हैं।

⑧ सर्वाधिक हिस्सा दक्षिण अमेरिका में

पाया जाता है।

✡ इसके समक्ष खतरे]

(1) जनजातियों द्वारा झूमिंग खेती के कारण वृक्षों की कटाई।

(2) व्यवसायिक दोहन के कारण वृक्षों की कटाई।

(3) जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा प्रतिरूप में परिवर्तन का नकारात्मक प्रभाव।

(4) क्षेत्रफल में लगातार गिरावट।

इस प्रकार स्पष्ट है कि उपर्युक्त नीति-निर्माण के माध्यम से 'पृथ्वी के फेफड़ों' को बचाने की सख्त आवश्यकता है ताकि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम किया जा सके।

19. Indian cities are not only mimicking the social and cultural structures of inequality and exclusion found in rural areas but are also creating fault lines for future conflicts. Discuss. **(250 words) 15**

भारतीय शहर न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में पाई जाने वाली असमानता और बहिष्करण की सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं की नकल कर रहे हैं, बल्कि भविष्य के संघर्षों के लिए दोषपूर्ण स्थिति का भी निर्माण कर रहे हैं। विवेचना कीजिए।

→ भारत में शहरीकरण तथा शहरी जनसंख्या में निरंतर बढ़ोतरी हो रही है। 2011 की जनगणना के अनुसार लगभग 31% भारतीय शहरों में निवास कर रहे हैं।

लेकिन सामाजिक व सांस्कृतिक संरचनाओं में असमानता व बहिष्करण का दोष इन शहरों में भी घुलता जा रहा है। इसके प्रमाण निम्न हैं →

① वर्ग विभाजन → अमीर व गरीब की खाई शहरों में निरंतर बढ़ती जा रही है। एक तरफ झुग्गी झोपड़ी तो दूसरी तरफ गगनचुंबी इमारतें।

② जाति व्यवस्था → बंद व्यवस्था होने के कारण शहरों में भी विवाह आदि का प्रमुख आधार यही है अतः अधिकांश जातियों का

से केन्द्रण शहरों में एक ही निश्चित स्थान पर पाया जाता है।

③ अनियंत्रित प्रवास → इससे आंतरिक-बाहरी का विवाद बढ़ता जा रहा है क्योंकि अनियंत्रित प्रवास संसाधनों पर दबाव पैदा करता है अतः भूमि पुत्र जैसी अवधारणाएं मुखर होती हैं।

④ धार्मिक विभाजन → धर्म की पहचान शहरों में भी बनी हुई है लेकिन सांप्रदायिक तनाव विभिन्न धर्मों के बीच लकीर खींचने का काम कर रहा है।

✱ भविष्य के संघर्षों के लिए दोषपूर्ण स्थिति का निर्माण कैसे →?

① महाराष्ट्र में यूपी बिहार के प्रवासियों पर तो कर्नाटक में उत्तर पूर्व के लोगों पर हमला आंतरिक- बाहरी की मानसिकता का परिणाम है।

(2) संसाधनों का असमान वितरण वर्ग विभाजन का परिणाम है।

(3) भूमिपुत्र जैसी अवधारणा आक्रामकता को बढ़ाती है।

(4) दिल्ली में हुए सांप्रदायिक दंगे धार्मिक विभाजन का परिणाम है।

(5) यूपी में जातीय संघर्ष जाति-व्यवस्था का परिणाम है।

अतः लोगों के मध्य आपसी सद्भाव, साक्षरता व जागरूकता बढ़ाकर साथ ही आजीविका के पर्याप्त अवसर पैदा कर व उचित लॉ एण्ड ऑर्डर के माध्यम से इन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

20. Examine the multi-dimensional impact of globalisation on tribal development in India. **(250 words) 15**
भारत में जनजातीय विकास पर वैश्वीकरण के बहुआयामी प्रभाव का परीक्षण कीजिए।

वैश्वीकरण से तात्पर्य वस्तुओं, सेवाओं के साथ-साथ लोगों उनकी संस्कृति, विचारों आदि के अबाध संचरण से है। इसने समस्त विश्व को 'वैश्विक गाँव बना दिया है।

वैश्वीकरण का प्रभाव चूंकि सभी वर्गों पर पड़ा है अतः जनजातीयों भी इससे प्रभावित हुई हैं →

जनजातीय विकास पर वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव →

① आजीविका के नये साधनों के कारण जीवन स्तर में सुधार

② जनजातियों का समाजीकरण व अन्य समाजों के साथ संलग्नता बढ़ी है।

③ जागरूकता बढ़ने से साक्षरता दर में सुधार हुआ है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

(4) आजीविका में सुधार से स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार (मातृ मृत्यु दर में कमी, शिशु मृत्यु दर में कमी आदि)

(5) अंधविश्वासों में कमी आई है साथ ही अमानवीय प्रथाओं जैसे नर बलि आदि पर रोक लगी है।

(6) जनजातीय संस्कृति का प्रचार प्रसार बढ़ा है जिसमें ट्राइफेड जैसी संस्थाओं की मुख्य भूमिका रही है।

☆ नकारात्मक प्रभाव]

(1) जनजातीय जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप बढ़ा है।

(2) उनके पारंपरिक अधिकारों को छीन लिया गया है।

(3) उनके पारंपरिक आवास स्थल जैसे→ वनों के क्षेत्रफल में संकुचन से आवास

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

प्रति।

(4) बाध्यपूर्ण निर्वासन → विकास परियोजनाओं के नाम पर

(5) उनकी पारंपरिक संस्कृति का लोप हुआ है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि वैश्वीकरण का प्रभाव जनजातीयों पर मिला-जुला हुआ है अतः सरकार को प्रयास करने चाहिए कि उचित कदम उठाकर जनजातियों के विकास को उचित दिशा प्रदान की जाए ताकि उनका जीवन स्तर सुधर सके।